भारतीय वास्तुकला एवं चित्रकला का सॉस्कृतिक वैभव

डॉ0 (श्रीमती) विनीता यादव
एसोसिएट प्रोफेसर (चित्रकला)
दाऊदयाल महिला महाविद्यालय, फिरोजाबाद

मुगल आधिपत्य के प्रारम्भिक वर्षो में देश में राजनैतिक अस्थिरता थी और कोई भी उच्च कोटि का भवन निर्माण का कार्य नहीं हो सका, परन्तु धीरे–धीरे इस शासन की प्रमुख स्थापत्य कला का विकास हुआ। अन्त में भारत की सर्वश्रेष्ठ नहीं थी। वरन वास्तु कला का यह शाही प्रयास था। इमारतों में थोड़े बहुत क्षेत्रीयता के लक्षणों को छोड़कर सभी में स्थापत्य और बनावट के सिद्वान्तों में समरूपता थी।

भवनों के विकास की प्रमुखता के लिए तथा उत्कृष्ठ उत्पादों के करीब दो शताब्दियों तक रख–रखाव के कई कारण थे। इनमें से धन, शक्ति तथा मुगलों की सौन्दर्यता में रूचि सर्वोपरि कारण था तथा उनके पॉचों वंशों में से प्रत्येक की वास्तु कला तथा चित्रकला के लिए विशेष रूचि थी। मुगल शासन के पॉचों शासन–बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहॉगीर और शाहजहॉ। इस काल की वास्तु कला के उत्थान में लगे रहे। परन्तु मुगल वास्तु कला का काल स्वतः ही दो प्रमुख वास्तु कलाओं में विभक्त हो जाता है। पहला अकबर के समय का लाल पत्थर की वास्तु–कला का काल तथा शाहजहॉ के समय का संगमरमर के विलासी महलों का काल मुगल वास्तु कला की उत्कृष्ठता का यह भी कारण था कि दोनों ही शासकों को वास्तुकला का अच्छा ज्ञान था, और भवनों के निर्माण में रूचि लिया करते थे। अतः यह कोई आश्चर्य नहीं हैं कि मुगलों के प्रभुत्व के देशों में भवन–कला के अनेकों उत्कृष्ठ नमूने पाये जाते हैं।

मुगल स्थापत्य कला के सन्दर्भ में भारत के प्रमुख निर्माण आज भी विद्यमान हैं। सुन्दर भवन तथा उनके अवशेष आज भी मुगलों की वास्तु कला में रूचि तथा उनके सांस्कृतिक उत्कर्ष को प्रदर्शित करते है। उनकी स्थापत्य कलात्मक शैली अति विविधता पूर्ण तथा कई स्थापत्यों का सम्मिश्रण है। उन्होंने अन्य शैलियों की अच्छी चीजों को अपनी स्थापत्य कला में समायोजित किया था। मुगलकाल के भवन पहले की सभी शैलियों के भवनों से अधिक शानदार तथ सजावट युक्त थे।

बाबर की राय भारतीय कला तथा शिल्प के बारे में बहुत अच्छी नहीं थी, इसलिए अपनी इमारतों के निर्माण के लिए कौल्स्टेन्टिनों विल के प्रमुख आर्किटैक्ट सिनान के चेलों को बुलाया था। बाबर के द्वार बनवाये गये अधिकतर भवन खत्म हो चुके हैं, परन्तु पानीपत में काबुल बाग की मस्जिद तथा सम्भल में जाती–मस्जिद अभी भी मौजूद है।

भवन निर्माण कला में उद्यानों तथा सरोवरों का भी बहुत महत्व है। कहीं–कहीं यह वास्तु शैली का अनिवार्य अंग भी बन जाते हैं। भवनों में लगाये जाने वाले उद्यान प्राचीन हिन्दू शैलियों में किस प्रकार के होते थे, यह कहना कठिन है किन्तु मुगल शासन के आरम्भ में बाबर को इस प्रकार की कोई भी व्यवस्था नहीं मिली। बाबर को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि लोग न तो योजनाबद्ध रूप से बाग लगाते हैं और न बहते हुए पानी कोई कृतित्र व्यवस्था ही करते हैं। बाबर को बाग लगाने का बहुत शौक था और काबुल में उसने दो बड़े–बड़े बाग लगवाये। आगरा में भी कई बाग लगवाये जिनमें रहट द्वारा पानी खींचने की व्यवस्था पत्थर की नालियॉ तथा पत्थर के तालाब और झरने बनवाये थे आवासीय भवनों में भी यही व्यवस्था की गयी।

मुगलकालीन चित्रकला उस मसय के इतिहास का एक जीता जागता उदाहरण है। इससे न केवल राज दरबार की बल्कि प्रजा की भी विस्तृत झॉकी मिल जाती हैं। राज्याश्रित चित्रकारों ने सभी प्रमुख व्यक्तियों के व्यक्ति चित्र अंकित किये थे। जहॉ हमें उस समय के इतिहास ग्रन्थों में इन व्यक्तियों के नाम और कार्यो के विवरण प्राप्त होते हैं वहीं यह चित्र उनके व्यक्तित्व को साकार रूप में उपस्थित करते हैं। अकबर ने स्वयं यह आदेश दिया थाकि उनके दरबार के सभी अमीर–उमरावों तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों की शबी हैं, तैयारी की जाये। जब हम इन व्यक्तियों को देखते है तो उस समय का इतिहास सजीव हो उठता है। इन चित्रों में चित्रांकित व्यक्तियों की वेशभूषा के अतिरिक्त उनकी मनः स्थिति, स्वभाव तथा चत्रित का भी पता चल जाता है।

मुगल सम्राटों को प्राचीन ग्रन्थों तथा कथा कहानियों का चित्रण कराने के अतिरिक्त अपने समय की ऐतिहासिक तथा दरबारी घटनाओं को भी चित्रित कराने का बहुत शौक था। इनमें प्रायः तीन प्रकार के विषय चित्रित हुए हैं। जिनमें प्रथम–दरबारों में किसी विशिष्ट अतिथि अथवा व्यक्ति का आगमन, द्वितीय–दरबार में की गयी विशेष उत्सव आदि का आयोजन अथवा शाही सबारी या आखेट एवं जुलूस के दृश्य भी देखने को मिलते है।

विशिष्ट अतिथियों अथवा व्यक्तियों से सम्बन्धित दरबारी चित्रों में मुगल युग की अनेक महत्वपूर्ण अंकन मिलते है, जैस–अकबर को अपने पिता की मृत्यु का समाचार मिलना।

दरबार में तानसेन का आना, जहॉगीर का दरबार, शाहजहॉ के दरबार में फारसी राजदूत का आना आदि। इन चित्रों के द्वारा दरबारी बातावरण, सिंहासन, सेवक, सैनिक के खड़े होने की व्यवस्था और उनकी वेशभूषा, दरबारी अदब कायदा आदि इन चित्रों में यथा–तथ्य चित्रित किए गए है। इन चित्रों के द्वारा मुगल कालीन इतिहास की अनेक घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है जिनका उल्लेख इतिहाकार भी छोड़ देते है।

दरबार में मनाये जाने वाले उत्सवों तथा बादशाह या राजकुमारों को अपने अनुचरों तथा सैनिकों सहित किसी विशेष यात्रा पर जाते हुए अंकित किया गा हैं और लगभग प्रत्येक राजा तथा राजकुमार के इस प्रकार के चित्र मिल जाते हैं। कभी कभी इस प्रकार की सबारी शहर में जाते हुए अंकित की गयी है। जहॉगीर के समय आखेट के चित्र बहुत अधिक बने हैं। और कई चित्रों में हाथी पर बैठकर जहॉगीर आखेट करते हुए अंकित किया गया हैं। इन चित्रों को देखने से उन लोगों की जीवन पद्धति के इस पक्ष का भी स्वरूप बहुत स्पष्ट हो जाता है।

किलों की घेराबन्दी और युद्धों से सम्बन्धित चित्र भी मुगल शैली के अनेक चित्रकारों द्वारा बनाये गये है। मुगलकालीन इतिहास लेखकों के संकेतों से यह स्पष्ट होता है कि अनेक चित्रकार युद्ध में भी बादशाह के साथ आते थे और ऑखों से देखते थे, उसी के अनुसार वह चित्र बनाते थे। यद्यपि इन चित्रों में युद्ध का यथा तथा अंकिततो नहीं हो पाता था, क्योंकि यह चित्र रण–क्षेत्र मे ंन बनाये जाकर चित्रशालाओं में ही अंकित किए जाते थे। फिर भी इनमें युद्ध की मुख्य–मुख्य घटनाओं, महत्वपूर्ण व्यक्तियों और युद्ध के संवेदनशील स्थलों का अंकन अवश्य रहता था। युद्ध के उत्साह और लड़ाई के तरीके को भी यह चित्रकार अच्छी तरह से अंकित करते थे। अकबर द्वारा रणथम्भौर के किले की घेराबन्दी का जो चित्रअंकित किया गया है उसमें अनेक बैलों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियॉ अत्यन्त तीखी चढायी पर तोपों आदि को ढो रहीं है। अनेक सैनिक और कर्मचारी इनको ऊपर चढाने में मदद करते हुए दर्शाये गये है। सेनापति ऊपर चट्टान के शिखर तोपों द्वारा किले पर की जाने वाली गोलावारी को देख रहा है।

मुगल बादशाहों को पशुओं के दृन्द्व युद्ध कराने का बहुत शौक था, विशेषकर हाथी तथा शेर की लड़ाई के अपने महलों में से ही देखा करते थे। मुगल चित्रकारों ने हाथियों की लड़ाई के अनेक चित्र अंकित किए हैं। यह लड़ाइयॉ आगरा तथा दिल्ली के किलों में नदी की ओर आयोजित की जाती थी। मुगल बादशाह इन लड़ाइयों से मनोरंजन के साथ–साथ प्रहार एवं बचाव कला भी सीखते थे।

प्राचीन काल से ही आगरा नगर का महल रहा है। द्वादर में मथुरा के राजा कंस का राजनैतिक बन्दियों के लिए खुला हुआ कारागार भी इसी नगर में बताया जाता है। बाद में इसे विभिन्न शासकों द्वारा राजधानी का दर्जा भी मिलता रहा है, परन्तु मुगलों की राजधानी बनने के बाद आगरा का चहुँमुखी विकास हुआ और दुनिया के नक्शे पर भी इस नगर ने स्थान प्राप्त किया। हिन्दुत्व इस्लाम को और इस्लाम हिन्दुत्व को अपने अन्दर एक दूसरे को घोल नहीं पाये परन्तु कुछ क्षेत्रों में सम्मिश्रण अवश्य हुआ तथा उसके फलस्वरूप नयी विचार धाराओं का उदर हुआ। मुगलों ने अपने शासन काल में अनेक इमारतों का निर्माण कराया, जिनमें से कुछ इमारतें स्थापत्य की दृष्टि से विश्व की सर्वश्रेष्ठ इमारतें मानी जाती है। इनका स्थापत्य चित्तानुरजन है तथा देश–विदेश से लोग इसे देखने भी आते हैं। मैंने इन भवनों का कई बार अवलोकन किया है।

आगरा के अधिकतर प्राचीन भवन मुगलकाल में ही बनाये गये है। अतः यह मुगलकाल का ही प्रतिनिधित्व करते हैं।

सन् 1628 ई0 में शाहजहॉ गद्दी पर बैठा। भवन निर्माण में उसकी अधिक रूचि होने के कारण उसने अनेक बड़े–बड़े महलों, मस्जिदों और ताजमहल जैसी विश्व विख्यात इमारतों का निर्माण कराया। सभी इमारतें या तो संगमरमर की बनायी गयी या उन पर श्वेत चूने का चिकना प्लास्टर किया गया जिससे वे संगमरमर जैसी लगें। आगरा किले के शाहजहॉ के समय खास महल बनवाया गया। उसका ऑगन बहुत बड़ा नहीं है परन्तु बड़ी बारीकी से पूर्ण किया गया है। इसके तीन ओर स्त्रियों के रहने के कक्ष हैं, जो बहुत सुन्दर नहीं हैं। इसकी चौथी भुजा में बहुमूल्य पत्थरों के जड़ाव द्वारा फूल–पत्तियों के आलेखन बनाये गए है। शाहजहॉ के समय महराव के स्थान पर दॉतेदार और विशेषकर नौ दॉतों का महराव बनने लगा था तथा से अलंकृत खम्भों पर आधारित किया जाता था। खम्भों में तोड़े लगाये जाते थे और उनके ऊपर सम्पूर्ण भवन में छज्जे बनाये जाते थे। गुम्बद अधिक ऊॅचे बनने लगे थे और छतरियों का प्रयोग बढने लगा। गुम्बदों पर विशाल पद्मकोष तथा कमल सुशोभित होन लगे। इमारतों के उठान और विभिन्न भागों में तालमेल बनाये रखने के सिद्वान्तों को अधिक महत्व दिया जाने लगा। इनको बनाने के लिए जोधपुर के पास मकराना नामक स्थान से बढिया किस्म का श्वेत संगमरमर मॅगाया गया उसे खूबसूरत चिकना किया गया और गोलाइयॉ तथा बस्थ सीमाएँ बडी साफ सुथरी तराशी गयीं। इनमें कई उभरी हुई नक्काशी भी की गयी। धरातल में चिकने पन और कोमलता के आकर्षक प्रभाव दिये गये यहॉ तक कि रंगीन पत्थर के जड़ाव में भी बारीक से बारीक आकृतियॉ अत्यन्त को मलता के साथ तथा ऐसी पारदर्शी झलक के साथ निर्मित की गयीं कि उनमें फूलों जैसी ताजगी और रंगों की चमक प्रतीत होती है।

आगरा किला की भॉति शाहजहॉ ने दिल्ली में भी सुन्दर भवनों का निर्माण कराया और दिल्ली के भवन इतने सुन्दर तो नहीं हैं परन्तु एक साथ बने होने के कारण इनमें एकरूपता है, इमारतों का विन्यास बड़ा साफ सुथरा और पंक्तिबद्ध होने लगा गुम्बद की रचना कुछ अधिक लम्बी होने लगी जो संकरा होकर फिर कुछ चौड़ा हो जाता है और बाद में मुड़कर बन्द हो जाता है। इस प्रकार नीचे के स्थान में इसमें एक सुन्दर अलंकृत पट्टी के लिए भी जगह निकल आयी, जिसमें खिले हुए कमल के फूलों का आलेखन किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रामनाथ–मध्यकालीन भारतीय कलायें एवं उनका विकास, पृ0 61 से 63
2. एल0पी0शर्मा–मैडिवल हिस्ट्री ऑफ इन्डिया, पृष्ठ 524–25
3. फर्गूसन–हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड ईस्टर्न आर्किटेक्चर, पृ0 587, 88
4. पर्सी ब्राउन–इण्डियन पेन्टिंग अण्डर द मुगल, पृ0 102
5. जी0के अग्रवाल–कला और कलम, पृ0 204
6. गेबिन हैम्बली, सिटीस ऑफ मुगल इण्डिया, पृष्ठ 47, 61, 63 एवं 64